1960 Generosity pays

In Sanmati Sandesh October 1960

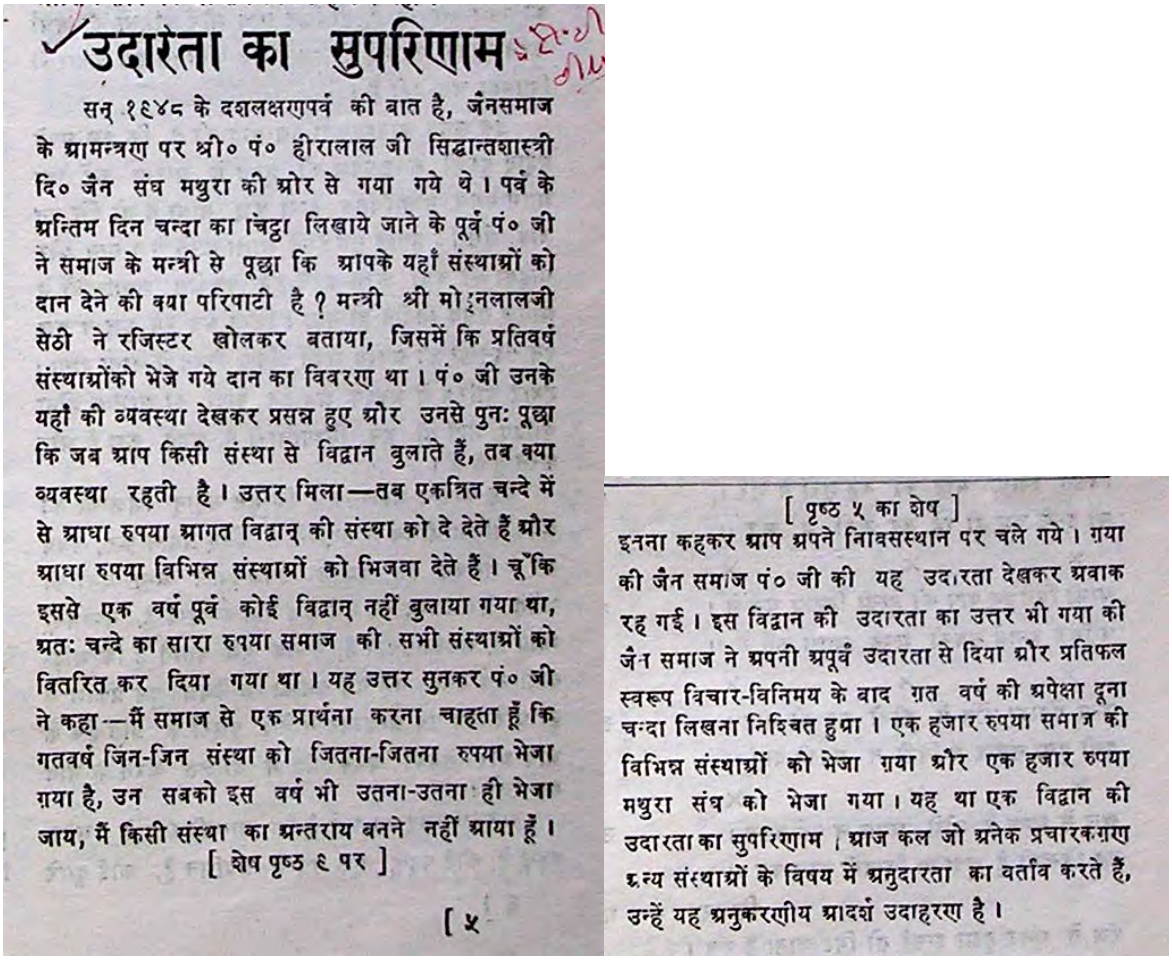

उदारता का सुपरिणाम

सन् १९४८ के दशलक्षणपर्व की बात है, जैनसमाज के आमन्त्रण पर श्री० पं० हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री दि० जैन संघ मथुरा की ओर से गया गये थे। पर्व के अन्तिम दिन चन्दा का चिट्ठा लिखाये जाने के पूर्व पं० जी ने समाज के मन्त्री से पूछा कि आपके यहाँ संस्थाओं को दान देने की क्या परिपाटी है ? मन्त्री श्री मोतीलालजी सेठी ने रजिस्टर खोलकर बताया, जिसमें कि प्रतिवर्ष संस्थाओंको भेजे गये दान का विवरण था। पं० जी उनके यहाँ की व्यवस्था देखकर प्रसन्न हुए और उनसे पुनः पूछा कि जब आप किसी संस्था से विद्वान बुलाते हैं, तब क्या व्यवस्था रहती है। उत्तर मिला—तब एकत्रित चन्दे में से आधा रुपया आगत विद्वान् की संस्था को दे देते हैं और आधा रुपया विभिन्न संस्थाओं को भिजवा देते हैं। चूँकि इससे एक वर्ष पूर्व कोई विद्वान् नहीं बुलाया गया था, अतः चन्दे का सारा रुपया समाज की सभी संस्थाओं को वितरित कर दिया गया था। यह उत्तर सुनकर पं० जी ने कहा—मैं समाज से एक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि गतवर्ष जिन-जिन संस्था को जितना-जितना रुपया भेजा गया है, उन सबको इस वर्ष भी उतना-उतना ही भेजा जाय, मैं किसी संस्था का अन्तराय बनने नहीं आया हूँ।

[शेष पृष्ठ ९ पर]

[पृष्ठ ५ का शेष]

इतना कहकर आप अपने निवासस्थान पर चले गये। गया की जैन समाज पं० जी की यह उदारता देखकर अवाक रह गई। इस विद्वान की उदारता का उत्तर भी गया की जैन समाज ने अपनी अपूर्व उदारता से दिया और प्रतिफल स्वरूप विचार-विनिमय के बाद गत वर्ष की अपेक्षा दूना चन्दा लिखना निश्चित हुआ। एक हजार रुपया समाज की विभिन्न संस्थाओं को भेजा गया और एक हजार रुपया मथुरा संघ को भेजा गया। यह था एक विद्वान की उदारता का सुपरिणाम। आज कल जो अनेक प्रचारकगण अन्य संस्थाओं के विषय में अनुदारता का वर्ताव करते हैं, उन्हें यह अनुकरणीय आदर्श उदाहरण है।